पाठ 9. लुई ब्रेल

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह बताना है कि मनुष्य के लिए कोई भी काम असंभव नहीं है, आवश्यकता केवल अपनी प्रतिभा को पहचानने की है। लुई ब्रेल ने नेत्रहीन होते हुए भी एक ऐसी लिपि बनाई जिसके द्वारा नेत्रहीन व्यक्ति भी पढ़ सकते हैं। यह असंभव को संभव कर सकने का एक प्रमाण है।

पाठ का सारांश

गरमी की छुट्टियों में राघव की दोस्ती कार्तिक से हुई। कार्तिक देख नहीं सकता था। कार्तिक ने राघव को ब्रेल लिपि वाली पुस्तक के बारे में बताया। बाद में कक्षा के सभी बच्चों को अध्यापिका ने लुई ब्रेल के बारे में विस्तार से बताया। नेत्रहीनों के जीवन में ज्ञान की रोशनी भरने वाले लुई ब्रेल का जन्म फ्रांस में पेरिस के समीप कुप्रे नामक गाँव में हुआ था। भूलवश एक औज़ार से खेलते समय बालक लुई की आँख में चोट लग गई, जिससे धीरे-धीरे उनकी आँखों की रोशनी जाती रही। जैक्विस पेलुई नामक पादरी ने लुई ब्रेल की बहुत मदद की। लुई ने अपनी असाधारण प्रतिभा से सबको प्रभावित किया। सैनिकों के लिए बनाई गई चार्ल्स बारबियर की गुप्त भाषा से प्रेरणा लेकर लुई ब्रेल ने दृष्टिबाधित लोगों के लिए एक अनोखी लिपि तैयार की। अपनी इस अनोखी लिपि के कारण लुई ब्रेल सदा के लिए अमर हो गए।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व **पहले पहल** में दिए गए प्रश्न बच्चों से पूछें। बच्चों को लुई ब्रेल के बारे में जानकारी दें। फिर पाठ का वाचन करें। बच्चों को समझाएँ, यदि सही दिशा में मेहनत की जाए तो सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

- बच्चों को ब्रेल लिपि के बारे में बताएँ।
- उनमें दूसरों की सहायता करने का गुण विकसित करें।
- समझाएँ कि हमें अपनी कमियों से निराश नहीं होना चाहिए। अपितु अपने गुणों और क्षमताओं को सही दिशा में प्रयोग करना चाहिए तथा निरंतर कुछ नया सीखते रहना चाहिए।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।